(2) के० डेविस—"समुदाय सबसे छोटा ऐसा क्षेत्रीय समूह है, जिसके सामाजिक जीवन के समस्त पहलू आ सकते हैं।"[2]

(3) गिंसबर्स—"समुदाय सामाजिक प्राणियों का एक ऐसा समूह समझा जाता है जो सामान्य जीवन व्यतीत करता हो, जिसमें सब प्रकार के असीमित, विभिन्न तथा सम्बन्ध होते हैं एवं जो उस सामान्य जीवन के परिणामस्वरूप होते हैं अथवा जो उस निर्माण करते हैं।"[3]

समुदाय शिक्षा संस्था के रूप में
(Community as an Agency of Education)

प्रत्येक समुदाय की अनेक आवश्यकतायें तथा समस्यायें होती हैं। इन आवश्यकताओं की पूर्ति एवं समस्याओं के समाधान से समुदाय का रहन-सहन ऊँचा उठता है तथा दिन-प्रतिदिन प्रगति की ओर अग्रसर होता है। जो समुदाय उचित शिक्षा की व्यवस्था नहीं कर पाता वह अपने सीमित क्षेत्र में अपनी सीमित आवश्यकताओं और ढंगों वाली संस्कृति से ही लिपटा रहता है। इससे उसकी निर्धनता ज्यों की त्यों बनी रहती है। अतः प्रत्येक समुदाय अपनी प्रगति के लिए नई पीढ़ी को अच्छी से अच्छी शिक्षा की व्यवस्था करने का प्रयास करता है। यही कारण है कि प्राचीन काल से लेकर अब तक समुदाय का शिक्षा से घनिष्ठ सम्बन्ध चला आ रहा है। हम देखते हैं कि आरम्भ से ही प्रत्येक समुदाय ने अपनी प्रगति के लिए राजनीतिक एवं आर्थिक परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए शिक्षा को सदैव अपने आदर्शों और उद्देश्यों के अनुसार मोड़ा है तथा अब भी मोड़ रहा है। इसीलिए स्कूल को समाज के लघुरूप (Miniature of Society) की संज्ञा दी जाती है। ध्यान देने की बात है कि समुदाय शिक्षा संस्था के रूप में बालक को औपचारिक तथा अनौपचारिक दोनों रूप से शिक्षित करता है। निम्नलिखित पंक्तियों में हम शिक्षा संस्था के रूप में समुदाय के महत्त्व तथा उसके द्वारा बालक पर पड़ने वाले प्रभावों एवं कार्यों पर प्रकाश डाल रहे हैं—